राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर
प्रधान मंत्री का संबोधन

(20 अगस्त, 2011)

मुझे खुशी है कि एक बार फिर मुझे राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार समारोह में हिस्सा लेने का मौका मिला है।

आज का दिन हमारे लिए एक महान नेता को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने का मौका है। श्री राजीव गांधी जी सही मायनों में भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता में उनका अटूट विश्वास था। Science and Technology से लेकर पंचायती राज को बढ़ावा देने तक, उन्होंने बहुत सारे क्षेत्रों में नई पहलें कीं। उन्होंने भारत को दुनिया के देशों में अपनी सही जगह दिलाने के लिए जो कोशिशें कीं वे ऐतिहासिक हैं। उनकी सोच प्रगतिशील थी और उस सोच का ही नतीजा है कि हमारा देश इतनी सामाजिक और आर्थिक तरक्की कर पाया है। यह उपयुक्त ही है कि उनकी याद में यह राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार स्थापित किया गया है।

हर साल इस समारोह में आदरणीया श्रीमती सोनिया गांधी हमारे बीच मौजूद होती हैं। लेकिन आज वे अस्वस्थ होने के कारण यहां नहीं आ पाई हैं। हम सब उनकी कमी महसूस कर रहे हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि सोनिया जी शीघ्र ही पूरी तरह स्वस्थ हों और फिर से हमारा मार्गदर्शन करें।

'Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture amongst Youth' – SPIC-MACAY को इस वर्ष के सद्भावना पुरस्कार के लिए चुना गया है। इस सोसायटी ने Indian classical music के जरिए हमारे विशाल देश में और खासतौर पर, नौजवान लोगों में एकता की भावना पैदा करने के लिए बहुत अच्छा काम किया है। उन्होंने Indian classical dance, लोक कलाओं और handicrafts

को भी बढ़ावा दिया है। हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान साधारण व्यक्ति को कराने में SPIC-MACAY का एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका काम यह दर्शाता है कि संगीत और संस्कृति की भाषा का उपयोग राष्ट्रीय एकता के लिए बहुत प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

मैं समझता हूं कि यह बहुत जरूरी है कि हम लोग अपने भारतीय संगीत, कला और साहित्य से अच्छी तरह वाकिफ हों। हम सबको यह प्रयास करना चाहिए कि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को अगली पीढ़ी के लिए संभालकर रखें।

मैं, इस सोसायटी से जुड़े सभी लोगों को मुबारकबाद देता हूं। SPIC-MACAY सही मायनों में इस पुरस्कार की हकदार है।

मैं आज SPIC-MACAY के संस्थापक Professor किरन सेठ की उपलब्धियों का खासतौर पर जिक्र करना चाहूंगा। साल 1977 में इस संस्था की स्थापना करते समय उन्होंने जो सफर शुरू किया था, वह आसान नहीं था। उनको प्रारंभ में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनसे कोई साधारण व्यक्ति जल्द ही घबरा जाता। लेकिन Professor किरन सेठ ने हिम्मत नहीं हारी। यह उनकी अनोखी शख्सियत का ही नतीजा है कि SPIC-MACAY इतना कुछ कर पाए हैं। उनकी कामयाबियां हम सबको प्रेरणा देती हैं।

मैं SPIC-MACAY को एक बार फिर आज के पुरस्कार के लिए बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि वह आगे भी अपना अच्छा काम जारी रखेंगे। मेरी सारी शुभकामनाएं उसके साथ हैं।

मैं, आज के पुरस्कार समारोह से जुड़े सभी लोगों को भी बधाई और धन्यवाद देता हूं।

.....